Shikshan Sanshodhan : Journal of Arts, Humanities and Social Sciences ISSN(o): 2581-6241
Monthly, Peer-Reviewed, Refereed, Indexed Journal Impact Factor: 6.471
Volume - 6, Issue - 1, January - 2023 Publication Date: 31/01/2023

DOIs:10.2018/SS/202301010 --:-- Research Paper / Article

किसानों की विभिन्न सामाजिक-आर्थिक समस्याएं : एक समाजशास्त्रीय अध्ययन

सुरेश कुमार भावरियाँ
शोधार्थी, **समाजशास्त्र विभाग**, **मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय**,
उदयपुर, **राजस्थान**
Email - bhawaria.suresh@gmail.com

सारांस : भारतीय किसान अनेक सामाजिक एवं आर्थिक समस्याओं से ग्रस्त है, इसमें मुख्य रूप से है अशिक्षा, अज्ञानता, निर्धनता, बेरोजगारी, आत्महत्या, छोटे व विखंडित होते जोत, न्यूनतम समर्थन मूल्य प्राप्त न होना आदि प्रमुख है। वर्तमान में हरित क्रांति के बाद उत्पादन तो दुगना हो गया है परंतु किसानों की आय दुगनी नहीं हुई है। वर्तमान समय में किसानों के पास ट्यूबेल, ट्रैक्टर, बूंद बूंद सिंचाई प्रणाली, फसल बीमा योजना, न्यूनतम समर्थन मूल्य, किसान क्रेडिट कार्ड, संकर बीज आदि सब सुविधाओं के होते हुए भी किसानों की हिम्मत जवाब दे रही है आज भी अधिकतर किसानों की सामाजिक आर्थिक स्थिति संतोषजनक नहीं है। जो यह दर्शाता है कि अभी भी कृषि क्षेत्र में एक ठोस कृषि नीति की आवश्यकता है, साथ ही विभिन्न सरकारी प्रयासों को सही ढंग से लागू किया जाना चाहिए और किसानों को दी जाने वाली सब्सिडी का सामाजिक अंकेक्षण जरूरी है ताकि किसानों को दिए जाने वाले लाभ को बीच में बिचौलिए, कर्मचारी और सरकारी अधिकारी हड़पने सके।

मुख्य शब्द -: किसान आत्महत्या, न्यूनतम समर्थन मूल्य, बेरोजगारी, किसानों में ऋणग्रस्तता, सामाजिक-आर्थिक समस्याएं ।

1. परिचय :

हमारे देश की पहचान एक कृषि प्रधान देश के रूप में रही है। भारत की कुल जनसंख्या का लगभग 70% प्रत्यक्ष व परोक्ष रूप से कृषि कार्यों पर निर्भर है। भारत की अर्थव्यवस्था का प्रमुख आधार कृषि ही है, हम कह सकते हैं कि किसान हमारे देश की 'रीड की हड्डी' के समान है अगर किसान कमजोर होगा तो हमारे देश भी कमजोर रहेगा इसलिए किसानों की सामाजिक-आर्थिक स्थिति मजबूत करने की सख्त आवश्यकता है। हमारे किसानों को समृद्व व आत्मनिर्भर बनाने के लिए केंद्र व राज्य दोनों सरकारों को कारगर कदम उठाने होंगे। हमारे किसानों की सामाजिक-आर्थिक स्थिति मजबूत नहीं है वे अनेक सामाजिक व आर्थिक समस्याओं से जूझ रहे हैं। हमारे किसानों की प्रमुख सामाजिक-आर्थिक समस्याओं में निर्धनता, अशिक्षा, बेरोजगारी, आत्महत्या, अंधविश्वास, रूढ़िवादिता, अनेक सामाजिक कुप्रथा जैसे - बाल विवाह, दहेज प्रथा, जाति प्रथा, छुआछूत आदि प्रमुख है, इसके साथ ही किसानों में ऋणग्रस्तता, मानसून की विफलता जिसमें कम वर्षा, सूखा व अकाल पड़ जाना, मृदा अपरदन, मशीनीकरण का अभाव, भंडारण सुविधाओं का अभाव, छोटे होते जोतों, पूंजी की कमी, न्यूनतम समर्थन मूल्य न मिलना, कृषि विपणन और कीमतों से संबंधित समस्याएं, कृषि नीति का अभाव जैसी अनेक समस्याओं से भारतीय किसान जूझ रहे हैं। किसानों की समस्याओं को गहराई से समझने के लिए किसानों का समाजशास्त्रीय अध्ययन की उपयोगिता दिनों दिन बढ़ती ही जा रही है। किसानों की आत्महत्याओं के पीछे न केवल आर्थिक कारण है बल्कि कई सामाजिक कारण भी है जिन्हे गहराई से समझने के लिए किसानों का समाजशास्त्रीय अध्ययन आवश्यक है।

2. साहित्य की समीक्षा :

शर्मा, नीलमणि (अगस्त, 2018) ने अपने शोध पत्र '**भारतीय किसान - दशा और दिशा**' मे बताया कि "केंद्र सरकार ने वर्ष 2017-18 के बजट में ग्रामीण कृषि और उससे जुड़े उद्योगों के लिए आवंटन 24% बढ़ाकर 186223 करोड रुपए कर दिया है। वर्ष 2022 तक किसानों तथा कृषि क्षेत्र से जुड़े लोगों की आमदनी दोगुनी करने के लिए अनेक योजनाएं बनाई गई हैं। इसके माध्यम से किसानों की दशा में सुधार लाकर उन्हें नई दिशा दी जा सकती है, लेकिन इसके लिए आवश्यक है कि सही नीति बनाई जाए और सही नीति से उसे कार्यान्वित्त किया जाए साथ ही उन्होंने बताया कि मंडी के लिए सरकार की ओर से ई-नाम यानी राष्ट्रीय कृषि बाजार की स्थापना की गई है यदि इसे सफलतापूर्वक अंजाम दिया जाए तो किसानों को उनकी उपज का अधिकतम भाव दिलाया जा सकता है जिनसे उनकी सामाजिक आर्थिक सुधार सकती है।"[1]

बगड़े, डॉ.रक्षित, (नवम्बर 24, 2018) ने अपने शोध पत्र **'भारत मे किसान आत्महत्यायें'** मे बताया कि "भारत मे आज किसान आत्महत्यायें एक भीषण समस्या बनी गई है, जिसके परिणामस्वरूप किसानों के गुणवत्तापुर्वक जीवन पर बुरा असर पडा हुआ है। किसानों का आत्मघागती व्यवहार देश, उनके परिवार और समाज पर बुरा प्रभाव डालता है। द युनायटेड नेशन आफ सस्टेनेबल डेव्हलपमेंट (UNCSD) के सर्वे के अनुसार सन 1995 से 2006 तक भारत मे हर 30 वे मिनट मे एक किसान आत्महत्या कर रहा है। नॅशनल क्राईम रिकार्ड ब्युरो (NCRB) के आंकडे देखने पर पता चलता है की, 2015-16 तक किसानों की आत्महत्या में 41 % की वृद्धी हुयी है। देश मे 2015 तक हर दिन 15 किसान आत्महत्या कर रहे थे, जो मानविय दृष्टि से देखने पर एक सोचनीय बात सिद्ध होती जा रही है। कई अध्ययनों ने विभीन्न पैमानो और स्तरो के आधार पर किसानों के आत्महत्या का अध्ययण किया है। भारत मे कृषी संकट, आय की कमी, बढती उत्पादन लागत, कृषी ऋण, बाजार की विफलता, कम उत्पादकता और पारिवारीक असमतोल के आधार पर आत्महत्या का अध्ययण कीया है। इसमे किसान की ऋणग्रस्तता को आत्महत्या का मुख्य कारण बताया है। राष्ट्रस्तर पर देखे तो यह बात सच साबीत हो रही है। भारत मे किसान आत्महत्या के कारणों मे ऋणग्रस्तता का कारण 20.6% पारिवारीक समस्या, 20.0% खेती सबंधित मुद्दे, 17% बिमारी 13% , और नशिले पदार्थोका सेवन 4.5 % है। राज्य स्तर पर अध्ययण यह बताता है की, महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश और छत्तीसगड मे क्रमश- 56 %, 45 % तथा 38 % आत्महत्याओ का कारण ऋणग्रस्तता रही है।"[2]

3. अध्ययन के उद्देश्य

- अध्ययन का मुख्य उद्देश्य किसानों की विभिन्न सामाजिक-आर्थिक समस्याओं का मूल्यांकन करना है।
- किसानों की सामाजिक आर्थिक समस्याओं को दूर करने के उपायों को सूझना है।

4. अनुसंधान पद्धति :

इस शोध कार्य के लिए वर्णनात्मक एवं व्याख्यात्मक शोध पद्धति का उपयोग किया गया है।

अध्ययन स्रोत

यह शोध का कार्य मुख्य रूप से द्वितीयक आंकड़ों और सूचनाओं पर आधारित है।

आंकड़ों व सूचनाओं का विश्लेषण व प्रस्तुतीकरण

किसानों की सबसे बड़ी सामाजिक एवं आर्थिक समस्याएं

- किसानों की निरक्षरता, अशिक्षा, निर्धनता और बेरोजगारी – हमारे गांवो में निरक्षरता, अशिक्षा, निर्धनता और बेरोजगारी किसानों की सबसे गंभीर समस्या है, किसान समाज में अधिकांश अभी भी अशिक्षित और निरक्षर व्यक्ति है। तकनीकी और कृषि संबंधित शिक्षा का तो घोर अभाव है, इसमें जहां अंधविश्वास और रूढ़िवाद को प्रोत्साहन मिलता है वहीं आर्थिक विकास में भी बाधा पड़ती है। किसानों कि निर्धनता के सामाजिक कारण अशिक्षा, कर्मकांडो पर अपव्यय, संयुक्त परिवार व्यवस्था और जाति प्रथा मुख्य रूप से है।
- किसानों की आत्महत्या - भारत में हर साल किसान आत्महत्या के कई मामले उज़ागर होते है। "राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो के अनुसार वर्ष 2004 में दर्ज की गई किसान आत्महत्याओं के मामले 18,241 थे – जो आज तक एक वर्ष में दर्ज किए गये उच्चतम संख्या थी। आंकड़े बताते हैं कि देश में कुल आत्महत्याओं का 11.2% किसान आत्महत्या करते हैं"।[3] इसके कई कारण है जैसे कि सूखा, बाढ़, उच्च ऋण, , सार्वजनिक मानसिक स्वास्थ्य समस्या, प्रतिकूल सरकारी नीतियां और गरीब सिंचाई सुविधाएं आदि जैसी कई स्थितियां हमारे किसानों के आत्महत्या के मामलों की बढ़ती संख्या के लिए जिम्मेदार माने जाते है। यह मामला गंभीर है और सरकार इस समस्या को नियंत्रित करने के लिए काम कर रही है।
- किसानों की ऋणग्रस्तता – "हरित क्रांति के बाद, आधुनिक कृषि में , कृषि के मुख्य इनपुट (बीज, कीटनाशक, उर्वरक) बहुत महंगे हो गए हैं। इन महंगे इनपुट को खरीदने के लिए अधिकांश किसान संस्थानों या साहूकारों से बहुत अधिक ब्याज दरों पर ऋण लेते हैं। फसल की विफलता या कृषि से कम रिटर्न ने किसान को गंभीर ऋणग्रस्तता में मजबूर कर दिया है।"[4]
- किसानों अनेक सामाजिक कुरीतियां जैसे - जातिवाद, छुआछूत, अंधविश्वास, दहेज प्रथा, बाल-विवाह, पर्दा प्रथा, मृत्युभोज, जादू-टोना, भूत-प्रेत, झाड़-फुक, जन्तर-मंतर मे विश्वास आदि सामाजिक कुरीतियां से घिरे हुऐ है।
- उप-विभाजन एवं जोत का विखंडन और भूमि सुधारों की कमी -: "संयुक्त परिवार प्रणाली के टूटने और जनसंख्या वृद्धि के कारण कृषि भूमि का छोटे और छोटे भूखंडों में लगातार उप-विभाजन हुआ है। कई बार छोटे किसानों को अपना कर्ज चुकाने के लिए अपनी जमीन का एक हिस्सा बेचने को मजबूर होना पड़ता है। यह भूमि का और उप-विभाजन बनाता है।"[5]
- इस के साथ ही किसान अनेक समस्याओ से ग्रस्त है जिसमे - आदिकालीन कृषि तकनीकी, भूमि का खंडीकरण', कृषि पर अत्यधिक भार, खराब गुणवत्ता वाले बीजों का उपयोग, खाद और उर्वरकों का अपर्याप्त उपयोग, अपर्याप्त पानी की आपूर्ति सिंचाई, अपर्याप्त सिंचाई की प्रणाली, कम वर्षा व सूखा व अकाल पड़ जाना, मशीनीकरण का अभाव, ठोस कृषि नीति का अभाव, मृदा अपरदन, अपर्याप्त भंडारण सुविधा, कृषि विपणन और कीमतों से संबंधित समस्याएं, अपर्याप्त परिवहन, पूंजी

की कमी, किसानों के स्वास्थ्य की बुरी दशा और राजनीतिक जागृति का भी भारी अभाव आदि अनेक समस्याओ से ग्रस्त है।

5. निष्कर्ष और सुझाव :

इस शोध पत्र में मुख्य रूप से किसानों की विभिन्न सामाजिक एवं आर्थिक समस्याओं का वर्णन किया गया है, जिसमें मुख्य रुप से किसान अनेक समस्याओं जिसमें अशिक्षा, निर्धनता, बेरोजगारी, सामाजिक कुरीतियां जैसे- बाल विवाह, मृत्यु भोज, अंधविश्वास, जातिवाद, आत्महत्या, जोतों का विखंडन, कृषि विपणन और कीमतों से संबंधित समस्याओं का विस्तृत वर्णन प्रस्तुत किया गया है, जो यह दर्शाता है की किसानों की सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति संतोषजनक नहीं है साथ ही इन विकट समस्याओं से निजात पाने के लिए विशेष सुझाव प्रदान किए गए हैं।

6. सुझाव :

- किसानों को कृषि प्रशिक्षण एवं कृषि प्रदर्शनी एवं विभिन्न योजनाओं द्वारा शिक्षित करना जरूरी है।
- विभिन्न सामाजिक कुरीतियों जैसे मृत्यु भोज, बाल विवाह, दहेज प्रथा आदि पर सरकार द्वारा रोक लगाने से ही किसानों की सामाजिक आर्थिक स्थिति सुधर सकती है।
- किसान क्रेडिट कार्ड एवं न्यूनतम समर्थन मूल्य (एम.एस.पी) और ठोस कृषि नीति को प्रभावी ढंग से लागू करना होगा।
- किसानों को दी जाने वाली सरकारी योजनाओं को पारदर्शिता के साथ लागू करना होगा।
- किसानों को परंपरागत कृषि के स्थान पर नवीनतम कृषि साधनों को अपनाने के लिए प्रेरित करना होगा
- कृषि के लिए दिया जाने वाला अनुदान को और भी तर्कसंगत बनाने की जरूरत है। और इसमें तकनीक का महत्वपूर्ण योगदान हो सकता है।
- कर्ज माफी जैसी शार्ट टर्म नीति समुचित रूप से प्रभावी नहीं होगी। इसलिए कृषि से जुड़ी समस्याओं का लांग टर्म हल ढूंढा जाना चाहिए।
- कृषि उत्पादों के भंडारण और उनके वितरण वाले पहलू पर सरकार को ध्यान देना होगा।

संदर्भ ग्रंथ सूची :

1. शर्मा, नीलमणि (अगस्त, 2018) 'भारतीय किसान - दशा और दिशा' संचार सोरभ। https://rajbhasha.gov.in/sites/default/files/lekh1st_hin.pdf
2. बगड़े, डॉ.रक्षित, "भारत मे किसान आत्महत्यायें" (नवम्बर 24, 2018). ISSUE–IV, VOLUME–VII (I) https://papers.ssrn.com/sol3/papers.cfm?abstract_id=3970652
3. विश्वास, अमित कुमार, "जीवन अस्तित्व और कृषक आत्महत्या" महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय का अभिक्रम, हिंदी समय।
4. https://www.onlyiasexam.com/2022/08/atyadhik-rnagrastata-ke-kya-gambheer-parinaam-hai.html
5. https://govtvacancy.net/sarkari-job/bharataya-kashha-ka-canataya-govtvacancynet-2